

SHRI BULU IMAM

Shri Bulu Imam is a renowned environmentalist working for the protection of tribal art and cultural heritage in Jharkhand. He is also an archaeologist, a revivalist of tribal paintings and the winner of the International Peace Award by the Gandhi Foundation for his humanitarian work.

2. Born on August 31, 1942, Sh. Imam is the grandson of Syed Hasan Imam, a leading Barrister, Judge of Calcutta High court (1912-1916) and the President of the Indian National congress (Bombay Session, 1918). Since 1987, he has been the Convenor of INTACH Hazaribagh Chapter. In 1991, he discovered the first rock-art of Jharkhand at Isco and subsequently brought to light over one dozen rock-art sites in the North Karanpura Valley. In 1993, he brought to light the Khovar (marriage) art, the Sohrai (harvest) murals painted on the walls of the mud houses of the Hazaribagh villages and established the connection between the region's Meso-Chalcolithic Rock-Art and the mural art done by the women in tribal village homes. He established the 'Sanskriti Museum & Art Gallery' in Hazaribagh along with the 'Tribal Women Artist Cooperative' (TWAC) to promote the tribal art of the region which has held over 50 international exhibitions of Khovar and Sohrai paintings in Australia, Europe, Canada and UK.

3. Shri Imam is a researcher and an authority in fields related to archaeology, tribal & rock art, vernacular folklore and history. He has published over 400 research paper and written several books on art and archaeology and monographs including Bridal Caves, INTACH, New Delhi (1995), Antiquarian Remains of Jharkhand, Aryan Books International, New Delhi (2014), The Nomadic Birhors of Hazaribagh- Their Life, Art, Songs Folklore & Ethnobotany, Berlin (2015), The Manjhi Santals of Hazaribagh- Their Hunt Rules, Songs, Lifestyle, Folklore & Hunting dogs, Berlin (2015), Hazaribagh School of Painting & Decorative Arts, Berlin (2015), the Flowering Branch- songs of the Manjhi Santals of Hazaribagh, Berlin (2015) etc.

4. Shri Imam has made several films on tribal art and culture of Jharkhand including The Birhor-Study of a Nomadic Tribe in Hazaribagh, produced by Zee Telefilms, Bombay (1999); the Sohrai Art of Hazaribagh, produced by Zee Telefilms, Bombay (1999); Tribal Women Artists, Feature Film (35mm Kodak Colour) with Films Division, Govt. of India, Bombay (2001); The One-Eared Elephant from Hazaribagh-HIVOS,Netherlands, directed by Susanne Gupta, Berlin(2004); Early Creative Expression of Man (Art of India Series, No.10), and the Eternal Dance (Art of India Series, No.11) produced for Doordarshan by Benoy K. Behl (2004); Search for the First Dog (filmed by Working Dog productions), produced by National Geographic (2004).

5. Shri Imam has received several prestigious Awards including Gandhi International Peace Award in 2011 at the House of Lords in London, the Vijay Ratna award in May 2002 for his work in promoting tribal art of Jharkhand by India International Friendship Society, the Rashtriya Gaurav Award In July 2002 for his work in environment protection “As Environmentalist of the Millennium” by India Institute of Success Awareness, Rajkiya Sanskritik Samman in 2006 (State Award for Culture) for contribution to culture in Jharkhand. He has been nominated for the Goldman Award, 2006 (USA) by Mr. Edward Goldsmith, The Ecologist, UK and Indira Gandhi National Integration Award 2007, by INTACH, New Delhi. In 2007, Doordarshan Golden Jubilee Award was presented by his Excellency, Governor of Jharkhand for his contribution to Tribal Arts in Jharkhand and in 2009, he was presented the Rotary Club Silver Jubilee Award for Lifetime Achievement for his outstanding contribution to Tribal Art, Poetry, Literature & Nature Conservation.



श्री बुलू इमाम

श्री बुलू इमाम झारखंड में जनजातीय कला और सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण के लिए कार्य कर रहे एक विख्यात पर्यावरणविद् हैं। आप पुरातत्व विज्ञानी, जनजातीय पेंटिंग को पुनर्जीवित करने वाले व्यक्ति तथा अपने मानवीय कार्य के लिए गांधी फाउंडेशन द्वारा अंतरराष्ट्रीय शांति पुरस्कार के विजेता भी हैं।

2. आपका जन्म 31 अगस्त, 1942 में हुआ था। आप सैयद हसन इमाम, जो कलकत्ता उच्च न्यायालय के एक प्रमुख बैरिस्टर, न्यायाधीश (1912-1916) और भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (बम्बई सत्र, 1918) के अध्यक्ष थे, के पौत्र हैं। वर्ष 1987 से आप इन्टेक हजारीबाग चैप्टर के संयोजक रहे हैं। वर्ष 1991 में आपने इस्को में झारखंड की प्रथम शैल-कला और उसके बाद उत्तरी कर्णपुरा घाटी में एक दर्जन से अधिक शैल-कला स्थलों की जानकारी दी। वर्ष 1993 में आपने खोअर (विवाह) कला तथा उसके बाद हजारीबाग के गांवों के मिट्टी के घरों की दीवारों पर सोहरई (फसल कटाई) भित्तियों को उजागर किया तथा क्षेत्र के मेसो-चैल्कोलिथिक शैल-कला तथा जनजातीय गांव के घरों में महिलाओं द्वारा की गई भित्ति कला के बीच संबंध स्थापित किया। आपने इस क्षेत्र की जनजातीय कला को बढ़ावा देने के लिए 'ट्रैबल वूमेन आर्टिस्ट को-ऑपरेटिव (टीडब्ल्यूएसी) के साथ-साथ हजारीबाग में 'संस्कृति म्युजियम एंड आर्ट गैलरी' की स्थापना की जिसने आस्ट्रेलिया, यूरोप, कनाडा और यू.के. में खोअर और सोहरई पेंटिंग की 50 से अधिक अंतरराष्ट्रीय प्रदर्शनियां आयोजित की हैं।

3. श्री इमाम पुरातत्व विज्ञान, जनजातीय और शैल-कला, स्थानीय लोक संगीत और इतिहास से संबंधित क्षेत्रों में अनुसंधानकर्ता और ऑथरिटी हैं। आपने कला और पुरातत्व विज्ञान तथा मोनोग्राफ पर 400 से अधिक अनुसंधान पत्र प्रकाशित किए हैं और कई किताबें लिखी हैं जिनमें ब्राइडल केब्ज, इन्टेक, नई दिल्ली (1995), एंटीक्वेरियन रीमेन्स ऑफ झारखंड, आर्यन बुक्स इंटरनेशनल, नई दिल्ली (2014), दि नोमेडिक बीरहोर्स ऑफ हजारीबाग-दीयरलाइफ, आर्ट, सौंग फोकलोर एंड इथनोबोथनी, बर्लिन (2015), दि मांझी संथाल्स ऑफ हजारीबाग-दीयर हंट रूल्स, सांग्स, लाइफस्टाइल, फोकलोर एंड हंटिंग डॉग्स, बर्लिन (2015), हजारीबाग स्कूल ऑफ पेंटिंग्स एंड डेकोरेटिव आर्ट, बर्लिन (2015), दि फ्लावरिंग ब्रांच- सांग्स ऑफ दि मांझी संस्थाल्स आफ हजारीबाग, बर्लिन (2015) शामिल हैं।

4. आपने झारखंड की जनजातीय कला और संस्कृति पर कई फिल्म बनाई हैं जिनमें जी टेलीफिल्म्स, बम्बई द्वारा प्रोड्यूस किया गया दि बीरहोर- स्टडी ऑफ नोमेडिक ट्राइब्स इन हजारीबाग (1999); टेलीफिल्म्स, बम्बई द्वारा प्रोड्यूस किया गया दि सोहरई आर्ट ऑफ हजारीबाग (1999); फिल्म प्रभाग, भारत सरकार, बम्बई के साथ बनाई गई फीचर फिल्म (35एमएम कोडक कलर), ट्राइबल वूमेन आर्टिस्ट (2001); सुशेन गुप्ता, बर्लिन के निर्देशन में वन इयर्ड एलीफैंट फ्राम हजारीबाग – एचआईवीओएस, नीदरलैंड (2004); बिनाय के बहल द्वारा दूदर्शन के लिए प्रोड्यूस किया गया अर्ली क्रिएटिव एक्सप्रेशन ऑफ मेन (आर्ट ऑफ इंडिया सीरीज, नं. 10), और इटर्नल डांस (आर्ट ऑफ इंडिया सीरीज, नं. 1(1); नेशनल ज्योग्राफिक द्वारा प्रोड्यूस किया गया सर्च फॉर दि फर्स्ट डॉग (वर्किंग डॉग प्रोडक्शन द्वारा फिल्माया गया) (2004)।

5. आपको कई प्रतिष्ठित पुरस्कारों से नवाजा गया है जिनमें लंदन में हाउस ऑफ लॉर्ड्स में गांधी इंटरनेशनल पीस अवार्ड, झारखंड की जनजातीय कला को बढ़ावा देने में योगदान के लिए इंडिया इंटरनेशनल फ्रेडशिप सोसायटी द्वारा मई, 2002 में विजय रत्न अवार्ड, ''सहस्त्राब्दि के पर्यावरणविद्'' के रूप में पर्यावरण संरक्षण में योगदान के लिए जुलाई, 2002 में इंडिया इंस्टीच्यूट ऑफ सक्सेज अवेयरनेस द्वारा राष्ट्रीय गौरव पुरस्कार, झारखंड की संस्कृति में योगदान के लिए वर्ष 2006 में राजकीय सांस्कृतिक सम्मान (स्टेट अवार्ड फॉर कल्चर) शामिल हैं। आपको श्री एडवार्ड गोल्ड स्मिथ, पारिस्थितिकी विज्ञानी, यू. के. द्वारा गोल्ड मैन अवार्ड, 2006 (यूएसए) तथा इन्टेक, नई दिल्ली द्वारा इन्दिरा गांधी नेशनल इंटिग्रेशन अवार्ड, 2007 के लिए नामित किया गया है। वर्ष 2007 में झारखंड के महामहिम राज्यपाल ने झारखंड की जनजातीय कलाओं में आपके योगदान के लिए आपको दूरदर्शन गोल्डन जुबली अवार्ड प्रदान किया तथा वर्ष 2009 में जनजातीय कला, कविता, साहित्य और प्रकृति संरक्षण में आपके उत्कृष्ट योगदान के लिए आपको रोटरी क्लब सिल्वर जुबली अवार्ड प्रदान किया गया।